हे बचपन

मौहर सिंह
रा.ज.सं., रूड़की

ढूंढे से भी नहीं मिलता, तू छोड़ गया मुझको,
हे बचपन तू किधर गया, मैं याद करूं तुझको।

घुटनों के बल चलता था, और लार टपकती मुंह से,
कच्चे आंगन की मिट्टी में, खेला करता मन से।
मां कहती थी आ बेटा, तुझे देखूं एक नजर से,
आंचल में ढक लेती थी, और करती प्यार हृदय से।

मां के आंचल में छिपकर, मैं धन्य समझता खुद को,
हे बचपन तू किधर गया, मैं याद करूं तुझको।

अपनी तुतलाती बोली से, सबका मन हर लेता,
नन्हे–नन्हे पैरों से, आंगन में रंग भर देता।
नहीं थी कोई चिंता मन में, नहीं था कोई भय,
भूख लगी तब कहा माता से, मां मुझको दो पय।

दूध पिलाती प्यार से माता, खुश होकर मुझको,
हे बचपन तू किधर गया, मैं याद करूं तुझको।

नहीं कोई छल था मन में, और नहीं कपट की बात,
सच्चे दिल से बोला करता, सच्ची–सच्ची बात।
ज्यों–ज्यों बढ़ी उम्र जब मेरी, बचपन पीछे छूटा,
नहीं मिलन की आस कि मानो, डाल से पत्ता टूटा।

कहे मौहर सिंह कभी मिल पाएंगे, लगता नहीं अब मुझको,
हे बचपन तू किधर गया, मैं याद करूं तुझको।